प्रात: क्लास 17-4-68 ओमशान्ति। शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। बाप ने अपना और इस सृष्टि चक्र का परिचय तो दिया है। यह तो बच्चों की बुद्धि में में बैठ गया है कि सृष्टि का चक्र हू बहू रिपीट होता है। जैसे नाटक बनाते हैं, फिर वह रिपीट होती है। तुम बच्चों की बुद्धि में भी यह चक्र फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम ही है स्वदर्शनचक्रधारी। तो बुद्धि में फिरना चाहिए। बाप द्वारा जो नालेज मिलती है वह ग्रहण करनी है। ऐसी ग्रहण हो जो पिछाड़ी में भी बाप द्वारा रचना के आदि मध्य अन्त की याद रहे। बच्चों को बहुत अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। यह है शिक्षा। बच्चे जानते हैं यह शिक्षा सिवाय हम ब्राह्मणों के कोई भी शूद्र नहीं जानते। वर्णों का फर्क तो है ना। मनुष्य सपने में हम सभी मिल कर एक हो जावेंगे। तुमको एक तो होने का है नहीं। अभी इतनी सारी दुनिया तो एक हो नहीं सकती। यहां सारे विश्व में एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा चाहिए। सतयुग में था। अभी नहीं है। विश्व की बादशाही थी। जिसके मालिक यह (ल०ना०) थे। तुमको यह बतलाना है कि विश्व में शान्ति का राज्य यह है। सिर्फ भारत की बात नहीं। जब इन्हीं का राज्य होता है तो सारे विश्व में शान्ति हो जाती है। यह सिवाय तुम्हारे और और कोई नहीं जानते। सभी हैं भक्त। फर्क भी तुम देखते हो। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। यह तो समझाया गया है ऐसे नहीं कि भक्ति नहीं करने से कोई भूत-प्रेत खा जावेंगे। नहीं। तुम तो बाप के बने हो। तुम्हारे में जो भी भूत है* वह सब निकल जानी है। पहले नम्बर में भूत है देह अभिमान। इनको निकालने लिए ही बाप देही अभिमानी बनाते रहते हैं। बाप को याद करने से कोई भी भूत सामने आवेगा नहीं। 2। जन्म लिए कोई भूत आता नहीं। यह 5 भूत हैं रावण सम्प्रदाय के। राम राज्य और रावण राज्य कहते तो हैं ना। रामराज्य अलग है, रावण राज्य अलग है। रावणराज्य में भ्रष्टाचारी, रामराज्य में श्रेष्ठाचारी होते हैं। इस का तुम्हारे सिवाय कोई को पता नहीं। तुम्हारे में भी जो समझु होशियार हैं। वह अच्छी रीत समझ सकते हैं। क्योंकि माया बिल्ली कोई कम नहीं है। कब2 पढ़ाई भी छोड़ देते हैं। सेन्टर पर ही नहीं जाते। दैवी गुण धारण नहीं करते। आंखें भी धोखा देती है। कोई चीज़ अच्छी देखते हैं तो खा लेंगे। तो अभी बाप समझाते हैं तुम बच्चों की तो यह है एमआबजेक्ट। तुमको ऐसा बनना है। ऐसे दैवी गुण धारण करनी है। प्रजा यथा राजा रानी तथा प्रजा। सभी में दैवी गुण होते हैं। वहां आसुरी गुण होते ही नहीं। असुर होते ही नहीं। तुम कुमार कुमारियों के सिवाय और कोई नहीं हैं जो इन बातों को समझें। तुमको शुध अहंकार है। बाकी तो सारी दुनिया में अशुध अहंकार है। तुम अभी आस्तिक बन गये हो। क्योंकि मीठे2 रूहानी बाप के बने हो। यह जानते हो कोई भी देहधारी कब राजयोग का ज्ञान वा याद की यात्रा सिखाये नहीं सकते। यह (ब्रहमा) भी नहीं सिखलाते हैं। एक बाप ही सिखलाते हैं। फिर तुम सीख कर फिर सिखलाते हो। तुम से पूछेंगे तुम यह किसने सिखाया तुम्हारा गुरु कौन है? क्योंकि टीचर तो यह अध्यात्मिक बातें नहीं सिखलाते हैं। यह तो गुरु ही सिखलाते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं हमारा गुरु नहीं परन्तु सद्गुरु है। उनको ही सुप्रीम कहा जाता है। ड्रामा अनुसार सतगुरु खुद ही आकर अपना परिचय देते हैं। और जो समझाते हैं सत्य ही समझाते हैं। सच्च खण्ड में जाने लिए। सत्य तो एक ही है। बाकी कोई भी देहधारी को याद करना वह है झूठ। देह अभिमान में आकर देह धारी को याद करते हैं। तुमको तो बाप देही अभिमानी बनाते हैं। तुम हो देही-अभिमानी। एक बाप को याद करने वाले। उस एक को ही कोई ईश्वर कोई भगवान कोई क्या कहते हैं। बहुत नाम है। जितनी भी धर्म जातियां हैं सभी की भाषा में और 2 नाम है। वास्तव में उनका नाम तो है ही एक। भक्ति मार्ग में बहुत नाम रख दिये हैं। यहां तो एक को ही याद करना है। सभी आत्मायें भी एक है। बाप भी एक है। बाकी हर आत्मा के कर्म तो अपनी2 हैं। कितने ढेर करोड़ों आत्मायें हैं। सभी के कर्म अपने2 हैं। एक जैसे कर्म हो नहीं सकते। अगर एक जैसे कर्म हो फिर तो सभी के फिचर्स एक जैसे हो जाये। कद भी एक जैसे हो न सके। थोड़ा फर्क जरूर होगा। यह नाटक तो एक ही है। सृष्टि भी एक ही है। अनेक

है। यह भी गपोड़ा लगाते हैं। ऊपर नीचे दुनियाएं हैं। ऊपर जो तारे हैं उन में भी दुनियाएं हैं। बाप हैं यह किसने किसको बताया है कि ऊपर नीचे सृष्टि है। किसने बताया है? उसका नाम लेना चाहिए ना। तो नाम फिर लेते हैं शास्त्रों का। शास्त्र तो जरूर कोई ने लिखी होंगी। लिखने वाले जरूर ऊंच ठहरे। जानने बिगड़ तो कोई लिख भी न सके। मनुष्य शास्त्र पढ़2 कर फिर शास्त्रों के जानने वाले हो जाते हैं। पूछो शास्त्र किसने बनाई? तो व्यास का नाम लेते हैं। वशिष्ट का भी नाम लेते हैं। अभी वह कोई लिख कर नहीं गये हैं। यह ड्रामा का बना बनाया खेल है। किसने बनाया यह नहीं जान सकते। जैसे बाप को नहीं जान सकते तो शास्त्र बनाने वाले को भी नहीं जान सकते। यह सभी नाम भक्ति मार्ग में रख दिया है। यह ड्रामा में नूंध है। सेकण्ड व सेकण्ड जो भी सारी दुनिया में पार्ट बजता है यह भी ड्रामा का बना बनाया प्लेन है। तुम बच्चों की बुधि में आ गया है। यह चक्र कैसे फिरता है-सभी मनुष्य मात्र जो भी हैं वह कैसे पार्ट बजाते हैं। बाप ने बताया है सतयुग में तो सिर्फ तुम्हारा ही पार्ट होता है। नम्बरवार आते हैं पार्ट बजाने। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम बच्चों को भी फिर औरों कोसमझाना पड़ता है। बड़े2 सेन्टर्स खुलते रहेंगे। तो वहां बड़े2 आदमी भी आवेंगे। गरीब भी आवेंगे। असकर कर के गरीबों की बुध में झट बैठता है। बड़े2 आदमी भल आते हैं फिर कोई काम पड़ गया तो खलास। कहेंगे फुर्सत नहीं है। प्रतिज्ञा करते हैं हम अच्छी रीत पढ़ेंगे फिर अगर नहीं पढ़ते हैं तो धक्का लग जाता है। माया और ही अपने तरफ खेंच लेती है। बहुत बच्चे हैं ज, पढ़ते2 पढ़ना ही बन्द कर देते हैं। पढ़ाई मिस रहे तो जरूर फेल हो पड़ेंगे। स्कूल में भी जो अच्छे2 बच्चे होते हैं वह कब शादियों आद पर, इधर-उधर जाने की छुट्टी नहीं लेते हैं। बुधि में रहता है हम अच्छी रीत पढ़ कर कालरशिप लेंगे। इसलिए पढ़ाई मिस करने का ख्याल नहीं करते। उन्हीं को पढ़ाई के सिवाय कुछ भी मीठा नहीं लगता है। समझते हैं मुफ्त टाईम वेस्ट हो जावेगा। यहां तो एकही टीचर पढ़ाने वाला बैठे हैं तो रोज पढ़ना चाहिए ना। पढ़ाई को छोड़नान चाहिए। इसमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। देखते हैं पढ़ने वाले अच्छे हैं तो पढ़ाने में भी दिल खुश होती है। टीचर का भी नाम बाबला होता है। उनकी ग्रेड बढ़ती है। ऊंच पद मिलता है। यहां भी बच्चे जो जितना पढ़ते हैं उतना ही ऊंच पद पाते हैं। एक ही क्लास में कोई पास हो ऊंच मर्तबा पालेते है कोई कम। सभी की कमाई एक जैसी नहीं होती है। बुधि पर भी सारा मदार है ना। कोई की बहुत अच्छी कमाई होती है। वह तो मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। तुम तो समझते हमको देहद का बाप पढ़ाते हैं। तो कितना अच्छी रीत पढ़ना चाहिए। उसमें गफ्लत न करनी चाहिए। पढ़ाई को छोड़नान चाहिए। एक दो के ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। एक दो को उल्टी बातें सुना कर पर मत पर नहीं चलना चाहिए। श्रीमत के लिए कोई कुछ भी कहे तुमको तो निश्चय है ना। बाप पढ़ाते हैं। तो फिर वह पढ़ाई छोड़नी न चाहिए। बच्चे तो सभी नम्बरवार ही हैं। तो बाप अवल नम्बर में हैं। उनकी पढ़ाई छोड़नी न चाहिए। इस पढ़ाई को छोड़ फिर कहां जावेंगे। और कहां तो यह पढ़ाई मिल न सके। शिवबाबा पास ही पढ़ना है। सौदा भी शिवबाबासे करना है। कोई भी उल्टी सुल्टी बातें सुना कर मुंह ही मोड़ देते हैं। यह बैंक भी शिव बाबा के हैं ना। समझो कोई बाहर में सर्वसे= सतसंग आद शुरू करते हैं। कहते हैं हमको तो शिव बाबा के बैंक में जमा करना है। कैसे जमा करेंगे। कनेक्शन तो कुछ भी नहीं। कनेक्शन प्रेम बिगर तो कुछ भी जमा हो न सके। जैसे आनन्द किशोर का बाप है कहते हैं हमारा ज्ञान भी इन जैसा ही है। मैं यहां से ही सीख कर यहां का ही ज्ञान देता हूं। और तुम तो दुकान निकाल बैठे। शिव बाबा के भण्डारे में तो कुछ भी जमा होता नहीं। तो वहां लेंगे फिर कैसे। शिव बाबा के साथ कनेक्शन भी तो चाहिए ना। यह तो शिव बाबा का रथ है। उनके बिगड़ जावेंगे कहां। उनके खजाने में कैसे पहुंचेगा। बच्चे जो आते हैं शिव बाबा के खजाने में पहुंचाते हैं। एक पैसा भी देते हैं वह सोणा हो जाता है। शिव बाबा कहते हैं तुमको उनके

बदली महल मिल जावेंगे। यह तो जानते हो यह पुरानी दुनिया सारी खत्म हो जाने वाली है। धनवान अच्छे2 बहुत आते हैं। कुटुम्ब परिवार पलते रहते हैं। ऐसे कोई नहीं कहेंगे शिव बाबा के भण्डारे से प्रवरस नहीं होती है। बाबाके पास कितने परिवार आये थे। सभी की पालना हुई ना। शिव बाबा के भण्डारे से। कोई गरीब है कोई शाहुकार। शाहुकार गरीब भी पलते हैं। इसमें डरने की तो बात ही नहीं है। चाहते हैं हम बाबा के बन जावें परन्तु लायक भी हो ना। माथा खपाने वाली नहीं चाहिए। इसमें भी तो तन्दुरुस्त चाहिए। ज्ञान भी दे सके। गवर्मेन्ट भी ऐसी जैसी को नही लेती है। अच्छी रीत जांच कर तन्दुरुस्त को ही लेंगे। बिमारों को तो नहीं बैठ सम्भालेंगे। जो न अपनी न दूसरों की सर्विस करेंगे ऐसे को लेकर क्या करेंगे। गरीब तो दुनिया में करोड़ों हैं। कितने को नौकरी नहीं मिलती है भूख मरते रहते हैं। बाप सभी को थोड़े ही अलो करेंगे। सभी को देखा जाता है। सर्विस कर सकते हैं या नहीं। लाचारी हालत में भण्डारे आदि की दरकार है तो लगा देते हैं। अभी उनको मिलेगा। नम्बरवार तो है ना। सभी अपना पुरुषार्थ करते रहते हैं। कोई अच्छा पुरुषार्थ करते2 फिर अबसेन्ट हो जाते हैं कारणे-अकारणे आना छोड़ देते हैं। तो फिर तन्दुरुस्ती भी ऐसी हो जाती है। एवर तन्दुरुस्ती बनने लिए तो यह सब सिखाया जाता है। जिनको शोक है समझते हैं यादसे हमारे पाप कटते हैं। वह अच्छी रीत पुरुषार्थ करते रहते हैं। कोई तो लाचार बैठेंगे टाईम पास हो तो जावें। ऐसे भी बहुत हैं। यह है अपने जांच करनी है। बाप समझाते रहते हैं गफलत करेंगे तो वह पता पड़ जावेगा। यह तो किसको पढ़ाये नहीं सकते। क्योंकि पढ़ाई पर ध्यान न है। पायन्टस याद नहीं है तो किसको पढ़ा न सके। फिर बाबा भी डोरापा लिख देते हैं। पूरा पढ़ते नहीं इसलिए पढ़ा न सके। फिर ब्राह्मणी की मांगनी करते रहते हैं। बाबा कहते हैं सात रोज मेतुमको लायक ब्राह्मण और ब्राह्मणी बन जाना चाहिए। जो फिर नाम का ब्राह्मण ब्राह्मणी नहीं चाहिए। ब्राह्मण ब्राह्मणी वह जिनके मुख में बाबाके गीता का ज्ञान कंठ हो। ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं। यहां भी ऐसे हैं। पढ़ाई पर अटेन्शन नहीं तो क्या जाकर बनेंगे। हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। सर्विस का सबूत देनाचाहिए। तब समझ में आवेगा। यह पद पावेंगे। बाबासे कोई पूछे तो बाबाबता सकते हैं। फिर वह कल्प कल्पान्तर के लिए हो जावेगा। पढ़ते पढ़ाते नहीं है तो अन्दर में समझना चाहिए मैं पूरा पढ़ा नहीं हूं। तब पढ़ा नहीं सकता हूं। बाबा भी पत्र लिख देते हैं तुम सीखते नहीं हो जो पढ़ा सको। फिर ब्राह्मणी भी क्या आकर करेगी। मुरली ही सुनानी है। कोई मुरली को विस्तार कर एड कर समझाते हैं। एडीशन तो तुम बच्चियां भी करती हो ना। सिर्फ सीधी मुरली पढ़ने में तो 10-15 मिनट लगेंगे। तो जैसे यह बच्चियां पढ़ कर समझा सकती है। वैसे वह भी कर सकते हैं। जैसे नामा है। कितने दिनों से सेन्टर है परन्तु ब्राह्मणी बिगर सेन्टर चला नहीं सकते हैं। बाबा कहते पढ़ाने लायक क्यों नही बनते हो। इतनी पत्थर बुद्धि हो। कहां तक ब्राह्मणी को भेजेंगे। आपसमान नहीं बनाते पढ़ाते नहीं तो ब्राह्मणी को भेज कर क्या करेंगे। जहां अच्छीरीत पढ़ते हैं उन्हों को को मदद देनी चाहिए। बहुतों को आपस में मतभेद रहता है। एक दो में ही लटकर मर कर पढ़ाई छोड़ देते हैं। कोई को लास्ट नम्बर में देख स्टुडन्ट अपनी पढ़ाई थोड़े ही छोड़ देंगे। जो करेंगे सो पावेंगे। एक बाक दो के बातों में आकर तुम पढ़ाई क्यो छोड़ते हो। यह भी ड्रामा तकदीर में न है। दिन प्रति दिन पढ़ाई जोर होती जावेगी। सेन्टर खुलते रहते हैं। यह शिव बाबा का खर्चा थोड़े ही है। बच्चों का ही खर्चा है। यहदान तो सब से अच्छा है ना। इस दान से तो अल्प काल का सुख मिलता है। इन से तो 21 जन्मों का प्राप्ति मिलता है। तुम जानते हो हम आते ही हैं नर से नारायण बनने। जो अच्छी पढ़ते हैं उनको फलो क है। कितना रेग्युलर पढ़ाई पढ़ना चाहिए। आपस में ही लड़-झगड़ पड़ते हैं। अक्सर कर कैपुरुषों का झगड़ा चलता है। अपने तकदीर से रुस पड़ते हैं। इसलिए मेजोरिटी ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं।

माताओं की है। नाम भी माताओं का बाला होता है। ड्रामा में माताओं की उन्नति भी नूंध है। यहां माताएं पुरुष के गुलाम बन जाती हैं। पति तुम्हारा गुरु ईश्वर है। जो कहे वह आज्ञा माननी है। पुरुष के पहले2 आज्ञा ही होती है कान कटारी चलाने की। हथियाला बांधा और जाते हैं हनीमुन करने। विकार में गिरनेलिए कितना खुशी से जाते हैं। जैसे कि अमृत का ग्लास मिलता है। बाप कहते हैंउन से तो तुम विकारी पतित बने हो। अभी पावन बनना है। पावनदुनिया में रावण राज्य होता नहीं। रावण का नाम ही नहीं। रावणराज्य में फिर पवित्रता है नहीं। यह है वेश्यालय। अभी बाप अमृत देते हैं जिससे तुम शिवालय में जाते हो। वहां 2। जन्म विष होता नहीं। यहसारा खेल बाप समझाते हैं। रावण उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप कहते हैं यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। इसमें ही पवित्र होना है। पास्ट ईज पास्ट। तुमको रावण राज्य मे उल्लू बनना ही था। अभी अल्ला आया है तो सुधरना है। कौड़ी से हीरे जैसा बनना है। रामराज्य मे बनना है तो पवित्र बनना है। विष के लिए अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। कितना हंगामा होता है। आर्यसमाजी भी कितना हंगाम करते हैं। यह भी सब ड्रामा में नूंध है। इनको कुछ भी खयाल नहीं किसा जाता है। गायन है ना तुम भाँको तो हमकोनींद आवे। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। और कोईबात सुना ही नहीं। आत्माभिमानी हो रहो। शरीर ही नही तो दूसरे का सुनेंगे ही कैसे। यह पक्का अभ्यास करो। हम आत्मा है अभी हमको वापस जाना है। नाम रूप में फंसने की बात ही नहीं। बाप कहते हैं यह सभी त्याग करो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। इस पर हीसारा मदार है। बाप ही श्री मत पी चलना है। 21 जन्म कब अपवित्र नहीं बनेंगे। यह है ही पतित दुनिया नक्र। अभी स्वर्ग की स्थापना होती है। इसके लिए बच्चों को अच्छी रीत पुरुषार्थ करनाचाहिए। बाप कहते हैं=सुबह धंधा आद भल करते रहो। भूख तो नहीं मरना है। आठ घंटा धंधा करने का देते हैं। बाकी 16 घंटा का हिसाब निकालो। आठ घंटा आराम करो। बाकी आठ घंटा इस गवर्मेन्ट में सर्विस करो। यह भी मुफ्त नहीं सारे विश्व की सेवा करते हो। अपनी भी सर्विस तो विश्व की भी सर्विस करते हो। उसके लिए टाईम निकालो। बाकी आठ घंटा जो चाहिए सो करो। मुख्य है यादकी यात्रा। पावनबनना है। टाईम वेस्ट न करना चाहिए। जिना टाईम निकाल सको। उस गवर्मेन्ट का मानते हो जिस से क्या मिलेगा हजार, दो या 5 सौ मिलेगा। इस पाण्डव गवर्मेन्ट का मानने से तुम पदमा पदमभाग्यशाली बनते हो। तो किसका मानना चाहिए। वह है रावण मत यह है राम की श्रीमत। टाईम निकालो जिस से ऊंच दर्जा पा सको। आठ रत्न बनते हैं तो जरूर आठ घंटा शिव बाबाको याद करते हो। भक्ति मार्ग में बहुत याद करते हैं। आर्थम गंवाते हैं परन्तु कुछ भी मिलता नहीं। दर्जा तो मिल न सके। गंगा वा जप तप कोई बाप थोड़े ही हैं। ज्ञान मार्ग में तो बाप से दर्जा मिलता है। बाप बहुत ही युक्तियां बताते हैं। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तोगफ्लत करते हैं। बड़ा हीनुकसान हो जावेगा। अन्यन्य ब्रह्मा कुमारियां गफ्लत नहीं करती हैं। श्रीमत पर चलते हैं कोई बात पर झगड़ते नहीं हैं। जेवर पर, कपड़े आद पर कोईझगड़ा नहीं। अगर कोई में है तो थर्डग्रेड समझो। भल सर्विस अच्छी करते हैं परन्तु घर में झगड़ा है, आशाएं हैं कुकड़ ज्ञानी समझो। कुकड योगी नहीं कहा जाता। कुकड़ ज्ञानी। पहले तो योग चाहिए। जिस से पाप भस्म हो। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो विश्व का मालिकबनाऊं। तुमकहते हो बाबा हम आप को भूल जाता हूं। लौकिक बाप को कब बच्चा भूल सकता है क्या। पारलौकिक बाप जिससे बेहद कावर्सा मिलता है उनकोतुम भुलाते क्यों हो। इसलिए यहां बिठाया जाता है। तो आदत पड़ जावे। बाप तो लाईट हाउस है ना। उनकोसर्चलाईट देनी ही है। बच्चे अपने से पूछें हम याद में थे या और कोई संकल्प थी। माया बड़ी दुश्मन है। बहुत ही पायन्दस से हरा देती है। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।